I J C R M

International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Review Article

वैदिक शिक्षा प्रणाली

डॉ. फ़ातमा खान [1*]

[1]शोधार्थी, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author: * डॉ. फ़ातमा खान

DOI: https:/doi.org/10.5281/zenodo.13882274

सारांश

प्राचीन भारतीय शिक्षा का उद्गम वेदो से ही माना जाता है।वेद का अर्थ ही ज्ञान होता है। यह भारतीय विचारधारा, संस्कृति और दर्शन के घोतक है। वैदिक संस्कृत साहित्य मानव जीवन के लिए स्वतःही एक विधान है। वे वेद मनुष्य के पुरुषार्था के निर्धारित ब्रह्मचर, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास चार अवस्थाओ के लिए कर्तव्य तथा मोक्ष के मार्ग निर्देशित करते है। इन्ही चारो अवस्थाओ में अपने कर्तव्यो का समुचित पालन करते हुए मनुष्य अपने चरम लक्ष्य की प्राप्ति में सफल हो सकता है।यही सफलता उसके सर्वांगीर्ण विकास की चरम परिमिती है। वैदिक शिक्षा प्रणाली वेदो पर आधारित शिक्षा है इस कारण इसे वैदिक शिक्षा प्रणाली कहा गया।वैदिक शिक्षा प्रणाली की मुख्य विशेषता गुरुकुल शिक्षा प्रणाली है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 15-06-2024
- **Accepted:** 20-07-2024
- **Published:** 02-10-2024
- **IJCRM:**3(5); 2024: 148-150
- **©2024, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Manuscript

फ़ातमा खान. वैदिक शिक्षा प्रणाली. International Journal of Contemporary Research in Multidisciplinary.2024; 3(5):148-150.

मुख्य शब्द: वैदिक, मोक्ष, शिक्षा प्रणाली, गुरुकुल, उपनयन, ब्रह्मचर्य, श्रमण, भिक्षाटन, समावर्तन।

1. परिचय

वैदिक शिक्षा की मुख्य विशेषता गुरुकुल शिक्षा प्रणाली रही है।जिसके अंतर्गत शिक्षा आश्रमो तथा गुरुकुलों में प्रदान की जाती थी शिक्षानुकुल वातावरण की दृष्टि से इन आश्रमो तथा गुरुकुलों की स्थापना प्राकृतिक परिवेश में की जाती थी। छात्र प्राकृति के सानिध्य में निर्विघ्न अध्ययन और चिंतन-मनन में व्यस्त रहते थे।इस शिक्षा व्यवस्था का उद्देश्य छात्रो का सम्पूर्ण विकास था। छात्रो को आवयशकतानुसार कलाकोशलों एवं शिल्पों इत्यादि की भी शिक्षा दी जाती थी। छात्रो के बौद्धिकविकास के साथ ही उनके शारीरिक और मानसिक विकास पर भी ध्यान दिया जाता था।गुरु का शिष्य के प्रति वात्सल्य वैदिक शिक्षा पद्धति का सर्वोपारि आदर्श था।

शिक्षा की अवधारणा

प्राचीन ऋषियों ने शिक्षा द्वारा विकसित और परिष्कृत बुद्धि को ही व्यक्ति का वास्तविक बल कहा है।शिक्षा व्यक्ति को सामाजिक प्रतिष्ठा ही नहीं प्रदान करती,मनुष्य के साथ ही समाज का भी भौतिक और आध्यात्मिक उत्कर्ष शिक्षा से ही संभव माना गया है।शिक्षा से मनुष्य मे ज्ञान अथवा विद्या का उदय होता है। इस विद्या से मोक्ष के प्रदाता के साथ ही शिल्प मे निपुणता प्रदान करने वाला कहा गया है। इस तरह शिक्षा व्यक्ति के इहलोक और परलोक दोनों को व्यवस्थित करती है

सा विद्या या विमुक्त्ये ।
(अर्थात विद्या हमे परलोक मे मोक्ष दिलाती है।)
विद्या ददाति विनयन विनयाद्याति पात्रताम।
पात्रत्वाध्दनमाप्नोति धनाध्दम्र तत: सुखम ॥

© 2024 डॉ. फ़ातमा खान. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

इस प्रकार शिक्षा इहलोक और परलोक दोनों पुरुषार्थों की सिद्धि करती है।

वैदिक शिक्षा का उद्देश्य

वैदिक शिक्षा का उद्देश्य आध्यात्मिक एवं मानवीय गुणो के मध्य संतुलन बनाए रखना था। प्रायः गुरु के समीप रहकर शिष्य गुरु के दैनिक जीवन तथा कर्मो मे जो सहायता करता था इसी के द्वारा उसे जीवन विषयक ज्ञान की प्राप्ति हो जाती थी।छात्र ऐसी नैतिक तथा आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त करता था,जिसके द्वारा वह समाज के प्रति अपने कर्तव्यो की पूर्ति सफलता पूर्वक कर सके। शिक्षा द्वारा प्रत्येक व्यक्ति अपनी शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक शक्तियों का विकास कर इस संसार मे और परलोक मे जीवन के वास्तविक सुख को प्राप्त करता था। ऋग्वेद के अनुसार शिक्षा द्वारा इहलोक और परलोक दोनों का सर्वांगीर्ण विकास शिक्षा की आधारशिला था।

गुरुकुल शिक्षा पद्धति

प्राचीन भारतीय शिक्षा के क्षेत्र मे गुरुकुलों का योगदान महत्वपूर्ण माना जाएगा। गुरुकुल शिक्षा पद्धति मे विद्यार्थी को गुरु अथवा आचार्य के कुल या किसी आश्रम मे रहकर शिक्षा ग्रहण करना होता था। वैदिक शिक्षा व्यवस्था मे सदा ही ज्ञान के सर्वोच्च केंद्र महर्षियों के आश्रम अर्थात गुरुकुल थे। गुरुकुलों की शिक्षा पद्धति व्यावहारिक तथा चरित्र निर्माण मूलक रही,जिसमे विद्यार्थी को आश्रम मे रहना अनिवार्य था। मनोरम प्राकृतिक वातावरण मे रहकर स्वस्थ शरीर का निर्माण,समानता का जीवन व्यतीत कर सामाजिक चेतना की प्राप्ति तथा गुरु के आदर्श जीवन से प्रेरणा लेकर सर्वांगीर्ण विकास प्राचीन गुरुकुलों की प्रमुख देंन थी।हर एक गुरुकुल या विद्यालय की एक विशिष्ट परंपरा रहती थी,वह अमूर्त होती हुई भी विधार्थी पर प्रभाव डालती थी। गुरु चरित्र तथा आचरण का शिष्य के मस्तिष्क पर सीधा प्रभाव पड़ता था तथा वह उसका अनुसरण करता था। परिवार के वातावरण से दूर रहने के कारण उसमे आत्मनिर्भरता की भावना विकसित होती थी तथा वह संसार की गतिविधियो से अधिक अच्छा परिचय प्राप्त कर सकता था। उसमे अनुशासन की प्रवृति का उदय होता था। इसी कारण प्राचीन व्यवस्थाकरो ने गुरुकुल शिक्षा पद्धति पर बल दिया।

गुरुकुल शिक्षा पद्धति मे विधाध्ययन से पूर्व विधार्थी के लिए दो आवश्यक विधान थे अथवा संस्कार थे,एक 'उपनयन' संस्कार और दूसरा 'ब्रहम्चर्यव्रत' धारण करना। यह दोनों ही विधान गुरुकुल पद्धति की प्रमुख विशेषता थी।

उपनयन संस्कार

उपनयन संस्कार का वैदिक संस्कारो मे सबसे अधिक महत्व था। उपनयन का शाब्दिक अर्थ है समीप ले जाना। इसका तात्पर्य था बालक को शिक्षा के गुरु के पास ले जाने से था। इस संस्कार के माध्यम से बालक ज्ञान प्राप्त करने या वेदाध्ययन का अधिकारी होता था। उपनयन संस्कार का उद्देश्य वेदो का अध्ययन था,इसके माध्यम से व्यक्ति गुरु , वेद, यम, नियम और देवता के निकट पहुंचता था जिससे वह ज्ञान प्राप्ति कर सके। ब्राह्मण,क्षत्रिय,वैश्य के लिए ही उपनयन संस्कार हो जाने के बाद ही बालक 'दिव्ज' । कहा जाता था। ' दिव्ज' का अर्थ होता है दुबारा आध्यात्मिक जन्म लिया हुआ। बालक के उपनयन के पश्चात उसका ब्रह्मचर्य जीवन प्रारम्भ होता था और इसी के साथ उसकी ओपचारिक और नियमित शिक्षा आचार्या कुल में सुनियोजित रूप से प्रारम्भ होती थी।

ब्रह्मचर्य

'ब्रह्मचर्य' शब्द दो शब्दो से मिलकर बना है,जिसका अर्थ है ''ब्रह्म'' के मार्ग पर चलना।'ब्रहम ' और वेद का घनिष्ठ संबंध है –ब्रहमदेव इतिश्रुते: । ब्रहम्चर्य का दूसरा अर्थ वेद मार्ग पर चलना अथवा ब्रहम ज्ञान है। प्राचीन भारत में विधार्थी को ब्रहमचारी कहते थे। ब्रहमचारी शब्द से तात्पर्य उस व्यक्ति से होता है जो शिक्षा के आदर्शो और महत्वाकांशाओ को सिद्ध करने के लिए ब्रहम्चर्य व्रत का पालन करता है। प्राचीन शास्त्रकारों का मानना था कि विधार्थी को तन- मन दोनों से ब्रहम्चर्य व्रत का पालन करना चाहिए। अध्ययन समाप्त करने के उपरांत ही वह गुरु की आज्ञा से विवाह कर सकता था। अपने तप और संयम से ब्रहमचारी ज्ञान और विज्ञान का अर्जन करता था तथा अपने जीवन को प्रशस्त करता था। विधार्थी गुरुकुल में ब्रहमचर्य व्रत का पालन करते हुए आचार्य की सेवा तथा वैदिक ग्रंथो के अध्ययन को अपना मुख्य कर्तव्य समझता था। वह गुरुकुल में एक तपस्वी की तरह सादा जीवन व्यतीत करता था।

भिक्षाटन

गुरुकुल पद्धति में विधार्थी के जीवन निर्वाह का प्रमुख साधन भिक्षावृत्ति था। ब्रहमचर्य के व्रत के रूप में 'भिक्षाटन''था जिसे वह दिन में दो बार सुबह शाम करता था। भिक्षाटन के पीछे यह दृष्टिकोण था कि ब्रहमचारी परस्पर धनी-निर्धन का भेद निकालकर गुरुकुल में समान रूप से एक दूसरे के साथ व्यवहार करे तथा साथ मिलकर गुरुकुल में रहे। ;हो जाते थे। गुरु के लिए भिक्षा मांगकर भोजन लाने से विधार्थी में समान नम्रता कि भावना विकसित होती थी। ब्रहमचारी के लिए दिन में दो बार भोजन ग्रहण करने का विधान था। शिक्षण विधि: गुरुकुल पद्धति में शिक्षा मौखिक होती थी,जिसे छात्र कंठस्थ करते थे। वैदिक शिक्षा पद्धति के अंतर्गत वेद ही अध्ययन के मुख्य विषय थे। वैदिक अध्यापको कि यह प्रबल अवधारणा रही कि वैदिक मंत्रो या सूत्रो कि मूल भाषा तथा उच्चारण में रतिमात्र भी परिवर्तन नहीं होना चाहिए क्योकि वैदिक मंत्र अपोरुषेय होने के कारण पवित्र है। वैदिक मंत्रो का गलत उच्चारण निंदनीय माना गया । वैदिक मंत्रो को शुद्ध उच्चारण और शुद्ध रूप से कंठस्थ करना महत्वपूर्ण समझा गया इसके लिए शिक्षण कार्य भी अत्यंत सावधानीपूर्वक किया जाता था।

समावर्तन संस्कार

गुरुकुल में विधार्थी द्वारा शिक्षा पूरी कर लेने के पश्चात उसका समावर्तन संस्कार होता था। 'समावर्तन' का अर्थ होता था आचार्य से शिक्षा प्राप्त कर ब्रहमचारी का अपने गृह के लिए प्रस्थान करना। यह संस्कार ब्रहंचर्य आश्रम की अवधि के समाप्त का घोतक था। इस अवसर पर गुरु ब्रहंचर्य को समावर्तन उपदेश देते थे। समावर्तन के बाद ब्रहमचारी स्नातक कहलाता और गुरु की आज्ञा प्राप्त कर गृहस्त आश्रम में प्रवेश का अधिकारी हो जाता था। समावर्तन संस्कार के अवसर पर आचार्य स्नातक को अनेक प्रकार की शिक्षाए देत था। जो आगे उसके जीवन का मार्गदर्शन करती थी।

© 2024 डॉ. फ़ातमा खान. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

वैदिक अध्ययन प्रणाली

ऋग्वेदिक काल में विधार्थियों का श्रवण,मनन,और निदिध्यासन इन तीनों मनोवैज्ञानिक शिक्षा प्रणालीयो द्वारा शिक्षा प्रदान की जाती थी। उत्तर वैदिक काल तथा बाद के कालो में प्रायः जिज्ञासा परक शैली,प्रश्नोत्तर शैली,उपमा शैली और शास्त्रार्थ शैली ;निदिध्यासन इन तीनों अध्यापन विधियो का भी पूर्ण प्रचलन था।

श्रवण: श्रवण का अर्थ है आचार्य के वचनो को सुनना इस अध्यापन विधि से आचार्य व्यक्तिगत रूप से विधार्थीयो को ज्ञान वितरित करता था जिससे छात्र अपने मस्तिष्क में ही सीधे उस ज्ञान को संग्रहित करे,लेखनबद्ध न करे। सिध्दांत यह था कि शब्द ही ' ब्रह्म''है। जिन ग्रंथो में ज्ञान का संग्रह था उन्हे 'श्रुति' कहा गया है,जिसका अर्थ वह ज्ञान जो सुना जाए। अतः छात्र श्रवण विधि द्वारा आचार्य के उपदेश का श्रद्धापूर्वक ह्रदयंगम करता था।

मनन: मनन प्रक्रिया के अंतर्गत शिष्य के द्वारा सुने हुए ज्ञान का और गुरु के वचनो का बौद्धिक विश्लेषण किया जाता था। श्रुतज्ञान पर विधार्थी स्वतंत्र होकर सोंच विचार करता था। इसे ही मनन कहा जाता था।

निदिध्यासन: मनन के उपरांत निदिध्यासन की स्थिति अर्थात सत्य में पूर्ण निमग्नता उतपन्न होती थी। निदिध्यासन के अंतराल में विचार किए गए अर्थ को अनुभूति छात्र द्वारा की जाती थी। पुनः ज्ञानार्जन प्रक्रिया में शिष्य की संयमित चेष्टाओ को ही प्रधानता दी जतसा थी। इसके द्वारा विधार्थी तटस्थ एवं एकाग्र मन होकर ज्ञान को आत्मसात करता था।

पाठ्यक्रम: वैदिक शिक्षा पाठ्यक्रमो में समय के साथ- साथ विकास और परिवर्तन होता रहा है। ऋग्वैदिक काल में शिक्षा का रूप प्रधानतः धार्मिक तथा शिक्षा का मुख्य विषय वैदिक साहित्य का अध्ययन ही था। उत्तर वैदिक काल तथा बाद के कालो में शिक्षा के साथ-साथ कला,शिल्पों और व्यावहारिक शिक्षा का भी ज्ञान विधार्थियों को दिया जाने लगा था। वैदिक साहित्य के अध्ययन से ज्ञात होता है कि प्राचीन वैदिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में चार वेद, छः वेदांग, चौदह विधाएँ, अटठारह शिल्प तथा चौसठ कलाएं आदि विषय सम्मिलित थे। इस प्रकार वैदिक शिक्षा के पाठ्यक्रमो से ऐसी शिक्षा दी जाती थी जिससे छात्र के व्याक्तित्व का पूर्ण विकास संभव हो पाता था।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ऋग्वेद. 10.717.
2. सुभाषित रत्न भण्डार. पृ.12.
3. मनुस्मृति. 2.118.
4. याज्ञयावल्क्य स्मृति. प्रा. 228.
5. अल्तेकर एएस. प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति. पृ.3.
6. मुखर्जी आरके. एनशिएंट इंडियन एजुकेशन. पृ.31.
7. अथर्ववेद. 11.54.
8. मिश्र जयशंकर. प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास. पृ.233.
9. तोमर लज्जाराम. प्राचीन शिक्षा पद्धति. पृ.62.

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

© 2024 डॉ. फ़ातमा खान. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/